अंक और उनका विकास

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. : 0731-4076812,4076813 www.ivaindia.com

क्या आपने कभी अंको के विषय में गंभीरता से विचर किया है । कदाचित नही, क्योंकि प्राय: कोई नहीं करता । अंक गणित (मैथोमेटिक्स) के नाम से स्कूल में कई छात्रों को पसीना छूटता है । शासकीय बजट जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ को लोग आंकाड़ों का पुलिन्दा कहते पाए जाएंगे । परंतु ये अंक और आंकडे न हो तो हम वापस पाषाण या ताम्र युग में पहुंच जाएंगे । इस अनभिज्ञता में किसी का दोष नहीं है । कुछ तो मानव स्वभाव ऐसा है कि जब तक आवश्यकता न पड़े वह किसी वस्तु, सूचना, हकीकत, इत्यादि की ओर ध्यान नहीं देते । परंतु कुछ लोग जो जिज्ञासु प्रकृति के होते है उनकी ज्ञान पिपासा कभी शांत नही होती । ऐसे ही लोग जीवन और प्रकृति के रहस्यों को जानने की चेष्टा करते है और ज्ञान के अथाह सागर में डुबकी लगाकर वे न जाने कितने रत्न निकाल लाते है । हमारे ऋषि मुनियों का इस मामले में कोई जोड़ नहीं । उन्होने ज्ञान-विज्ञान की अपार संपदा का संचय किया था उसका एक अंश अंक शास्त्र भी है । विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी ऐसे मनीषी हुए और उनका भी पर्याप्त योगदान है, फिर भी हमारे पूर्वजों की बात हीं कुछ ओर थी तथा पाश्चात्य विद्धानों में से अधिकांश ने बहुत कुछ भारत से ग्रहण किया था, इसके पुख्ता सबूत उपलब्ध है ।

चूंकि हम अंक विज्ञान को ज्योतिष की एक विद्या के रुप में ले रहे है, इसलिये इस शब्द की संक्षिप्त चर्चा प्रारंभ में हीं कर लेना उचित होगा । अंक-ज्योतिष का संधि विग्रह करने से ही बहुत कुछ स्पष्ट हो जाएगा । अंक तो 1 से लेकर 9 तक की संख्याएं है और ज्योतिष भविष्य कथन का नाम है । अर्थात अंको की सहायता से उन पर विचार कर व्यक्ति के भविष्य के विषय में निष्कर्ष निकालने वाले शास्त्र को अंक-ज्योतिष कहा जाता है ।

अंकों के महत्व को चंद उदाहरणों से समझा जा सकता है। हम कुछ तारीखों को क्यों याद रखते है ? जैसे स्वयं का जन्म दिन, परिजनों, मित्रों के जन्म दिवस, अवसान दिवस, स्वतंत्रता या स्वाधीनता दिवस, शहीद दिवस, शिक्षक दिवस, त्योहारों के दिन, नव वर्ष इत्यादि। पंचांग को देखें तो लगभग हर दिन विश्व या देश में कुछ न कुछ घटा था, जिसकी जानकारी हमें मिलती है। अच्छे दिनों में हम खुशिया मनाते, आपस में बांटते है। आजकल जब शिशु का जन्म होता है तो प्रसूतिग्रह में उसके लिये एक प्रस्तिका या फाइल मिलती है, जिसमें अनेक स्तंभ होते है। किस दिन वह पैदा हुआ, किस दिन उसके पहले शब्द का उच्चारण किया, किस दिन घुटनों के बल चला, किस दिन पहला कदम चला, किस दिन पहली दफा स्कूल गया आदि। इस प्रकार तारीखों के अंक जुड़ते चले जाते है। इस संसार में सब कुछ नश्वर है अत: जो आया है उसे एक दिन जाना ही है। अंक या संख्याएं अनंत है। वे लाखों वर्षो से है और रहेंगी, पर व्यक्ति का अधिकार उसकी जन्म तिथि से लेकर महाप्रयाण की तिथि तक ही रहता है और इस दौरान उसके जीवन में अंकों की छटा किसी न किसी रुप में बिखरती ही रहती है।

सच कहा जाए तो सभ्यता की विकास गाथा में अंक मील का पहला पत्थर है। जो कुछ हुआ है, हो रहा है या आगे चल कर होगा, उसे केवल अंकों की सहायता से जाना और व्यक्त किया जा सकता है। अंकों का एक तर्क संगत सिलसिला होता है, उसकी चाल पूर्व निर्धारित होती है। पाश्चात्य विद्वान पायथागोरस तो कहता है कि अखिल ब्रह्मंड अंकों में आबाद है। अंको से बाहर कुछ है ही नही।

अंक वस्तुत निसर्ग के अद्रश्य नियम है, जिन्हें हम देख नहीं पाते, किंतु वे हमारे जीवन को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते है। अंक विज्ञान एक से नौ अंकों के बीच समाहित है, यद्यपि शून्य को अनदेखा नही कीया जा सकता जो कुछ न होते हुए भी बहुत

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore : 0731-4076613, 4076623 www.ivaindia.com

कुछ होता है । यह प्रमाणित हो चुका है कि जीवन की स्थितियों को इन अंकों के पारस्परिक संयोजनों द्वारा सुधारा जा सकता है । एक प्रश्न किसी के मन में उठना स्वाभाविक है कि क्या व्यक्ति का अंकों पर नियंत्रण है ? न तो उसका जन्म दिनांक पर नियंत्रण है और न मृत्यु तिथि पर तो बीच की अवधि जिसे हम जीवन कहते है उस पर वह केसे नियंत्रण रख सकता है ? और यदि रख सकता है, तो किस हद तक ? परंतु यह शंका निर्मूल है । जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है अंकों का रहस्य परत-दर-परत खुलता जाता है । इन संख्याओं का सही संयोजन सफलता के ऐसे द्वार खोल सकता है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है ।

1 से लेकर 9 तक के अंक मूल अंक कहे जाते है जबकि शून्य अंकों की अनुपस्थिति का प्रतीक है । भारत के प्राचीन मनीषियों ने संसार को शून्य तथा दशमलव पद्धति का उपहार दिया है । और तो और सारे अरबी अंक भी भारत की देन है । उपनिषदों ने शून्य को असीम कहा है । इसी से समस्त अंक निकलते है और इसी में समाहित हो जाते है । 1 से लेकर 9 तक आने के बाद उनकी पुनरावृत्ति होती है । और शून्य संख्या के मूल्य को घटा भी सकता है तो बना भी सकता है । स्तंभ में ऊपर से नीचे आप एक से नौ तक के अंक बढ़ते क्रम में लिखें और उसके सामने 9 से 1 तक के अंक उलटे क्रम में लिखें तो प्रत्येक का योग 10 ही आएगा । देखिये -

उदाहरण 1

1+9 = 10

2+8 = 10

3+7 = 10

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. : 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

4+6 = 10

5+5 = 10

उदाहरण 2

नौ के बाद के अंक लिखते चलें तो क्या होता है

10 अर्थात 1+0 = 1

11 अर्थात 1+1 = 2

12 अर्थात 1+2 = 3

13 अर्थात 1+3 = 4

14 अर्थात 1+4 = 5

15 अर्थात 1+5 = 6

16 अर्थात 1+6 = 7

17 अर्थात 1+7 = 8

18 अर्थात 1+8 = 9

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. : 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

इसके बाद यदि हम 19 लेते है तो वह 1+9 = 10 हो जाएगा अर्थात 9 के बाद अंकों की पुनरावृत्ति होने लगती है। इसीलिये 9 तक के अंक, अंक ज्योतिष के आधार

मने गए है।

इनमें बीच के अंक 5 का विशेष महत्व है जो आगे विस्तार से समझाया जाएगा। आगे बढ़ने से पहले एक बात जान लेना जरुरी है कि अंक अपने आप में अकेला होता है और संख्या एक से अधिक अंकों के मिलने से बनती है।

अंको के प्रकार

अंक शास्त्र में 5 प्रकार के अंक माने गए है, (1) मूलांक, (2) भाग्यांक, (3) नामांक, (4) मासांक और (5) वर्षांक

1. मूलांक

मूलांक जातक का चित्र या परछाई है, जो जन्म तिथि से ज्ञात होता है। जन्म या कोई भी घटना अंग्रेजी की 1 से लेकर 31 तारीख तक किसी भी तारीख को हो सकती है। मान लीजिये किसी की जन्म तिथि 11-02-1935 है तो उसका मूलांक 2 होगा, जो जन्म ढिनांक के अंको का योग है। इसमें माह और वर्ष को शामिल नहीं किया जाता है तो इस जातक का जन्म ढिनांक चूंकि 11 है। तो 1+1 = 2 हुआ और वही उसका मूलांक है। इसी प्रकार किसी की जन्म तिथि 24 है तो मूलांक होगा 2+4 = 6। यदि 4 है तो 0+4 = 4 मूलांक होगा। इकाई प्राप्त होने तक जोड़ करते जाना चाहिये। इस सूत्र के अनुसार किसी भी जातक का मूलांक प्राप्त किया जा सकता है। फिर 1 से 31 तक के अंकों के मूलांकों की तालिका नीचे दी जा रही है।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com